16.04.2020 B.Ed- II Uni. IV

गाँधीजी का नई तालीम प्रतिमान ⇒ गाँधी जी ने कहा था कि शिक्षा से मेरा अभिप्राय है "बालक एवं मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के सर्वोत्तम गुणों का चतुर्मुखी विकास।" उनका मानना था मनुष्य न तो स्थूल शरीर है, न कोरी बुद्धि है और न ही केवल हृदय या आत्मा है। संपूर्ण मनुष्य के निर्माण के लिए तीनों के समुचित समन्वय की आवश्यकता होती है और यही शिक्षा की सच्ची व्यवस्था है। इनकी दृष्टि में शिक्षा एक बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास का साधन है जो उसे पूर्ण मनुष्य बना सके।

शिक्षा के संदर्भ में चिन्तन करते हुए गाँधी जी इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि व्यक्ति का हित सबके हित में निहित है, एक वकील के काम का वही मूल्य है जो एक नाई के काम का है और इस अर्थ में कि अपने कार्यों के द्वारा जीविका उपार्जन का अधिकार सबको एक सा है। केवल बौद्धिक शिक्षा ही संपूर्ण नहीं है बल्कि इसके साथ श्रम की शिक्षा का मुख्य अंग है। शिक्षा में चरित्र और नैतिकता की शिक्षा का भी योगदान है। शिक्षा के अनौपचारिक साधन परिवार की सहायता का सहयोग प्राप्त करना भी अनिवार्य है और सादगी, सेवा भाव आदि भी शिक्षा प्राप्ति के साधन है।

गाँधी जी के नई तालीम प्रतिमान के प्रमुख बिन्दु ⇒

नई तालीम के उद्देश्य ⇒

I. लोकतंत्रीय समाज की स्थापना ⇒

Scanned with CamScanner

II. आर्थिक उन्नति ⇒

III. नैतिक विकास ⇒

नई तालीम के आधार ⇒

I. वैयक्तिक आधार -

II. सामाजिक आधार -

III. आर्थिक आधार -

IV. सांस्कृतिक आधार -

V. मनोवैज्ञानिक आधार -

VI. नैतिक आधार -

Scanned with CamScanner